Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

FOR-LNMU B. Com part-2 Subsidiary paper -3 Indian economy and entrepreneurship development

***Unit- 5 Entrepreneurship Development* And For I. com**

Entrepreneurship Lecture -3 Date – 20-07-2020

प्रश्न - व्यावसायिक संगठन के प्रारूप का चुनाव करते समय आप किन-किन तत्वों को ध्यान में रखेंगे? (Discuss the factors which you should bear in mind while selecting a form of business organization).

उत्तर- व्यावसायिक संगठन के स्वरूप के चयन को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors affecting choice of Forms of Business Organisation)- स्वामित्व के स्वरूप का चयन बहुत सोच-विचार के बाद करना चाहिए, क्योंकि एक बार चुन लेने के बाद आसानी से स्वरूप को नहीं बदला जा सकता। व्यवसाय की स्थापना पर व्यावसायिक संगठन के स्वरूप का चयन करते समय निम्नलिखित घटकों को ध्यान में रखना चाहिए

1. व्यवसाय की प्रकृति- स्वामित्व का स्वरूप सर्वप्रथम व्यवसाय की प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए। व्यवसाय अनेक प्रकार के होते हैं, जैसे-थोक व्यापार, फुटकर व्यापार, उद्योग, वाणिज्यिक सेवाएं (यातायात, माल गोदाम आदि) तथा व्यक्तिगत सेवाएं, जैसे-डॉक्टर, दलाल आदि । फुटकर व्यापार तथा व्यक्तिगत

सेवाजों में व्यक्तिगत सम्पर्क अत्यन्त आवश्यक है, अतः एकाकी व्यापार तथा साझेदारी उपयुक्त होगी।

2. वैधानिक औपचारिकताएँ- व्यावसायिक संगठन के किसी प्रारूप का चुनाव करते समय व्यवसायी को उससे संबंधित वैधानिक प्रतिबंधों की पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। हमारे देश में भी ऐसे अनेक अधिनियम हैं, जिनका ज्ञान होना जरूरी है। कम्पनी की स्थापना भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत की जा सकती है। व्यावसायिक संगठन के प्रारूप का चुनाव करते समय यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि वह वैधानिक दृष्टि से वह उपयुक्त है अथवा नहीं।

3.दायित्व की सीमा- यद्यपि प्रत्येक व्यवसाय में कुछ-न-कुछ दायित्व होता है, किन्तु संगठन के प्रारूप का चयन करते समय यह ध्यान रहे कि व्यवसाय में विनियोजित पूँजी एवं उससे मिलने वाले लाभ की दृष्टि से दायित्व उचित हो। दायित्व दो प्रकार का होता है-सीमित एवं असीमित। कम्पनी के अंशधारियों का दायित्व सीमित होता, है और उनकी निजी सम्पत्ति पर कम्पनी का कोई अधिकार नहीं होता, जबकि एकाकी व्यापार में अथवा साझेदारी में मालिकों का दायित्व असीमित रहता है अर्थात् व्यापार के जोखिम के साथ उनकी निजी सम्पत्ति जुड़ी

रहती है। इस प्रकार एकाकी व्यापार और साझेदारी में जोखिम की मात्रा अधिक होती है, जबकि कम्पनी की दशा में अंशधारी द्वारा विनियोजित पूँजी तक सीमित रहती है।

4.पूँजी की मात्रा- व्यवसाय में पूँजी की मात्रा व्यवसाय के प्रारूप को निश्चित करने में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि पूजी की आवश्यकता कम है, तो एकाकी व्यवसाय अधिक उपयुक्त होगा। अधिक पूँजी की आवश्यकता होने पर साझेदारी अथवा कम्पनी उपयुक्त होगी। जब अधिक स अधिक लोगों से पैसे लेकर विशाल पंजी प्राप्त करना हो, तो कम्पनी उपयुक्त होगी।

5 भौगोलिक कार्यक्षेत्र - व्यवसाय जितना और बड़ा होगा, उसके लिए उतने ही अधिक प्रबन्ध और नियम की आवश्यकता पड़ेगी। अतः व्यावसायिक संगठन का रोग चुनना चाहिए, जो प्रबन्ध एवं निरीक्षण के कार्य को सा सुविधाजनक बना दे। इस दृष्टि से स्थानीय क्षेत्र मामले को एकाकी स्वामित्व के अन्तर्गत स्थापित किया जा सकता जिन व्यवसायों के कार्यक्षेत्र राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय हों. स्थापना कम्पनी या कॉर्पोरेशन के रूप में की जा सकती है।

6. नियंत्रण व निर्देशन की यात्रा- सभी प्रकार व्यावसायिक संगठनों में नियंत्रण तथा निर्देशन की मात्रा अलग-अ रहती है। अतः यदि व्यवसायी सम्पूर्ण नियंत्रण अपने पास । रखना चाहता है तो एकाकी व्यापार, यदि अन्य लोगों के मिलकर प्रबंध एवं निर्देशन करना चाहता है, तो साझेदारी प्रा. उपयुक्त होगा। परन्तु यदि प्रबंध और निर्देशन प्रबंध विशेषता हाथ सौंपना आवश्यक हो, तो इस दशा में कम्पनी का व्यावसायिक। संगठन प्रारूप ही उपयुक्त होगा।

7. निरंतरता एवं स्थायित्व- व्यावसायिक संगठन के प्र: का जीवन काल कुछ सीमा तक उसके स्थायित्व के तत्व पर। निर्भर करता है। कुछ प्रारूप इस प्रकार के हैं, जिनमें स्थायित्व । कमी पायी जाती है और कुछ आकस्मिक घटनाओं के घटित । पर उनका जीवन तुरन्त समाप्त हो जाता है। परन्तु कुछ प्राम ऐसे भी हैं, जिन पर आकस्मिक घटनाओं का कुछ भी प्रभावन पड़ता और वे निरन्तर निर्बाध गति से चलते रहते हैं। जैसे-एका व्यापारी की मृत्यु होने पर व्यवसाय समाप्त हो जाता है, जब कम्पनी में किसी अंशधारी की मृत्यु होने पर कम्पनी पर का प्रभाव नहीं पड़ता। अतः व्यावसायिक संगठन का चुनाव का समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि व्यावसायिक संगठन इस प्रकार का हो, जो बिना किसी रुकावट के स्थायी। से दीर्घकाल तक चल सके।

8. लोचशीलता- व्यावसायिक स्वामित्व का प्रारूप में होना चाहिए, जिसमें बदलती परिस्थितियों के अनुसार जी परिवर्तन की क्षमता हो।

9. व्यावसायिक रहस्यों की सुरक्षा- प्रत्येक व्यवसाय कुछ गुप्त बातें अवश्य होती हैं। एकाकी व्यवसाय में व्यावसायिक रहस्य अत्यधिक सुरक्षित रहते हैं, जबकि साझेदारी में कम कम्पनी की दशा में रहस्यों को गुप्त रखने की सम्भावना समाप्त हो जाती है।

10. कर-दायित्व- व्यावसायिक संगठन का वही प्रारूप उचित समझा जाता है, जिसमें व्यवसायी का कर-दायित्व न्यून हो।

11. परिचालन में मितव्ययिता- व्यावसायिक संगठन प्रारूप का चुनाव करते समय परिचालन व्यय का भी ध्यान दिया जाना चाहिए। कुछ व्यवसाय ऐसे होते हैं, जो एकाकी स्वामित्व में क ही मितव्ययतापूर्वक चलाए जा सकते हैं, जैसे-टेलर की दुकान, किराने की दुकान।

12. उत्पत्ति तथा वितरण का पैमाना- यदि उत्पत्ति अथवा वितरण का कार्य छोटे पैमाने पर करना है, तो एकाकी व्यापार

श्रेष्ठ रहेगा और यदि बड़े पैमाने पर करना है, तो कम्पनी व्यवसाय ठीक होगा।

निष्कर्ष- उल्लेखनीय है कि संगठन प्रारूप में उपर्युक्त की दुकान, सभी गुण होने चाहिए, परन्तु ऐसा कोई प्रारूप नहीं है, जिसमें ये सभी गुण एक साथ विद्यमान हों। अतः प्रवर्तक को अपनी त्ति अथवा

आवश्यकताओं के संदर्भ में यह विचार करना चाहिए कि गुणों का की व्यापार होना नितान्त आवश्यक है और किन गुणों का होना कितना आवश्यक व्यवसाय है तत्पश्चात ही उस व्यावसायिक संगठन का चयन करना चाहिए, जिसमें सर्वाधिक गुण हों।